स्नातक प्रतिष्ठा खंड – II हिन्दी

'आदिकाल के नामकरण पर विचार' का शोधांश

डॉ॰ सत्यप्रिया — पूर्व पाठक
हिन्दी विभाग
एस॰एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

जैसाकि इसके पूर्व यह बतलाया गया कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में कालविभाजन एवं उसका नामकरण विवाद का विषय रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ॰ रामकुमार वर्मा प्रभृति विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य के आदिकाल को विभिन्न नाम पर अपना मत दिया है। इसके पूर्व भी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को बीज वपन काल कहा था किन्तु यह नाम भी भाषा विशेषताओं से युक्त नहीं है। सर्वप्रथम तो यह इस भ्रम धारणा को जन्म देता है कि इस काल में ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य का बीजारोपण हुआ था। यानी इसके पूर्व हिन्दी का अस्तित्व नहीं था। यह बात सरासर गलत है। यही कारण है कि इतिहासकारों के बीच यह नाम आदर नहीं पा सका।

डॉ॰ धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री तो इसे ह्रास काल के नाम से पुकारते हैं। इस नाम में तो नकारात्मकता की भरमार है। इससे यह आभासित होता है कि यह साहित्य के ह्रास का काल है, जबकि यह काल साहित्य के विकास का काल है। ऐसे नामों से तो हिन्दी साहित्य की मर्यादा ही गिरती दिखलाई पड़ती है।

आधुनिक विद्वानों में शुमार डॉ॰ राम खेलावन पाण्डेय ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ "हिन्दी साहित्य का नया इतिहास" में नये सिरे से नामकरण पर विचार किया है। वे इस काल को संक्रमण काल का नाम देते हैं। उनका तर्क है कि यह वह काल है जब हि

notes
Phone
email
website

अपभ्रंश से अलग हो रही थी। अतः हिंदी का प्रचलन अभी आरंभ नहीं हुआ था। उधर अपभ्रंश भी अपना तेज धीरे-धीरे खो रही थी। अतः इसे संक्रमण काल कहा जाना सर्वाधिक उपयुक्त है। डॉ० पाण्डेय का यह नामकरण एक सीमित अर्थ में ही उपयुक्त है। क्योंकि जिसे हम संक्रमण कह रहे हैं वह केवल आदिकाल में ही नहीं आता। वह आदि और भक्तिकाल के बीच में भी आया है, भक्ति और रीतिकाल के बीच में भी आया है, वह संक्रमण काल रीति और आधुनिक काल के बीच में भी आया है। जब इतने सारी जगहों पर संक्रमण काल आता रहा है तो इसे केवल आदि काल के लिए ही रूढ़ क्यों कर दिया जाये? स्पष्ट है कि उनका यह नामकरण भी संदर्भ तथ्यों को समेटने में सक्षम नहीं है।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि आखिर इस काल का सही और सटीक नाम कौन सा दिया जाए। इस सन्दर्भ में डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बीच का रास्ता निकालने का प्रयास किया है। वे कहते हैं कि ~~यह काल~~ इस काल का साहित्य अन्तर्विरोधों का साहित्य है ऐसे में किसी एक प्रवृत्ति के आधार पर इस काल का नामकरण नहीं किया जा सकता है। इस काल के साहित्य पर शोध की वकालत करते हुए वे कहते हैं कि जबतक कोई स्पष्ट प्रवृत्ति हमारे सामने नहीं आ जाती तबतक इसे आदिकाल कहा जाना बुरा नहीं है। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि आदिकाल एक भ्रामक धारणा की सृष्टि करता है और श्रोता के मन में यह भाव पैदा करता है कि यह काल कोई आदिम मनोभावापन्न, परम्पराविनिर्मुक्त काव्य रूढ़ियों से अछूते साहित्य का काल है, जबकि ऐसा नहीं है"। वैसे मिश्रबन्धुओं ने भी इस काल को आदिकाल ही कहा था। ऐसे में कामचलाने के लिए इस काल को शोधजन्य निष्कर्ष तक पहुँचने तक इसे आदिकाल के नाम से पुकारा जाना समीचीन प्रतीत होता है।